ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(9): 107-111
www.allresearchjournal.com
Received: 10-07-2023
Accepted: 15-08-2023

सविता वर्मा
प्रोफेसर, चित्रकला, राजकीय कला महाविद्यालय कोटा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
सविता वर्मा
प्रोफेसर, चित्रकला, राजकीय कला महाविद्यालय कोटा, राजस्थान, भारत

नारी के परिप्रेक्ष्य में कला के विकास की संभावनाएं

सविता वर्मा

सारांश
कला के प्रारंभिक स्वरूप पर दृष्टिपात करें तो नारी के विभिन्न रूपों तथा उसके वैशिष्ट्य का अनुमान हो जाता है । ईश्वर ने संसार की रचना के अंतर्गत नारी को अनेक विशेष गुणों से परिपूर्ण बनाया है । नारीत्व में निहित दया, करुणा, प्रेम, वात्सल्य नारी को विशिष्टता प्रदान करते हैं ।इसके अतिरिक्त कलागत अभिव्यक्ति से उसके अनेक अवतार सामने आते हैं । कहीं वह अप्सरा है तो कहीं लौकिक नारी, कहीं कुलवधू है तो कहीं सेवा में समर्पित दासी, वह शक्ति रूपा देवी भी है और त्रासदी से ग्रस्त अबला भी वह सृष्टि भी है और सृजिका भी । चित्रणीय दृश्य के अनुसार चाहे वह नायिका है अथवा सहनायिका, जननी है अथवा प्रेयसी विभिन्न भूमिकाओं में वह अंकित हुई है किंतु अंततोगत्वा रहती वह "नारी" ही ... जिसके श्रवण, स्पर्श स्मरण अथवा दर्शन मात्र से ही चित् भावविह्वल हो जाता है । हर युग में नारी की स्थिति परिवर्तित हुई है । कभी समाज ने उसकी प्रशंसा की है, तो कभी उसे दासी समझकर उसकी अवहेलना की है। मनु स्मृति में लिखा है - "यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवत:। यत्रे वास्तु न पूज्यंते सर्वास्तत्राफल: क्रिया।" अर्थात जहां स्त्री की पूजा की जाती है वहां देवता वास करते हैं।
सन् 1970 के दशक में महिला कलाकारों की कला में कुछ परिवर्तन आया । अब उनमें आत्म जागृति का उदय हुआ । सन् 1986 ललित कला अकादमी, त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली, भारत सरकार के मानव अधिकार एवं विकास मंत्रालय, शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्रालय, वूमन वेलफेयर मंत्रालय एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से "भारतीय महिला कलाकार"शीर्षक से देश की प्रमुख महिला कलाकारों की संयुक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

कूटशब्द : वैशिष्ट्य, सर्वास्तत्राफल:, मनोवैज्ञानिक, अंततोगत्वा, दृष्टिपात, शैशवावस्था, प्रतिध्वनि

प्रस्तावना
कला कल्याण की जननी है । इस धरती पर मनुष्य की उदय बेला का इतिहास कला के द्वारा ही रूपायित हुआ है । कला इस विराट विश्व की सर्जना शक्ति होने के कारण सृष्टि के समस्त पदार्थों में व्याप्त है। वह अनंतरूपा है। और उसके इन अनंत रूपों की अभिव्यक्ति एवं निष्पत्ति का आधार कलाकार है । जितने भी तत्ववित्, साहित्यसृष्टा और कलासाधक हुए, उन सब ने भिन्न-भिन्न मार्गों का अवलंब लेकर उसी एकमेव लक्ष्य का अनुसंधान किया । विभिन्न युगों में कला के रूप की परिकल्पना विभिन्न दृष्टिकोण से की जा रही है। कला की उत्पत्ति के मूल में हमें धार्मिक भावना की प्रधानता दिखाई देती है ; प्रागैतिहासिक युग की कलाकृतियों के संबंध में यह बात विशेष रूप से चरितार्थ होती है। हम देखते हैं कि आदिम युग में मनुष्य ने पार्थिव वस्तुओं को आध्यात्मिक रूप में देने के लिए आकाश, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र, नदियां, पर्वत, ऋतुओं आदि के रहस्य को आंकने का यत्न किया ।उसने उन सभी वस्तुओं में एक अदृश्य शक्ति की कल्पना की, जिन वस्तुओं की वह जानकारी प्राप्त न कर सका।
कला के प्रारंभिक स्वरूप पर दृष्टिपात करें तो नारी के विभिन्न रूपों तथा उसके वैशिष्ट्य का अनुमान हो जाता है ।ईश्वर ने संसार की रचना के अंतर्गत नारी को अनेक विशेष गुणों से परिपूर्ण बनाया है ।नारीत्व में निहित दया, करुणा, प्रेम, वात्सल्य नारी को विशिष्टता प्रदान करते हैं ।इसके अतिरिक्त कलागत अभिव्यक्ति से उसके अनेक अवतार सामने आते हैं । कहीं वह अप्सरा है तो कहीं लौकिक नारी, कहीं कुलवधू है तो कहीं सेवा में समर्पित दासी, वह शक्ति रूपा देवी भी है और त्रासदी से ग्रस्त अबला भी वह सृष्टि भी है और सृजिका भी । चित्रणीय

दृश्य के अनुसार चाहे वह नायिका है अथवा सहनायिका, जननी है अथवा प्रेयसी विभिन्न भूमिकाओं में वह अंकित हुई है किंतु अंततोगत्वा रहती वह "नारी" ही ... जिसके श्रवण, स्पर्श स्मरण अथवा दर्शन मात्र से ही चित् भावविह्वल हो जाता है ।

चित्रकला और शिल्पकला में संसार की पुरातन से अधुनातन सभ्यता ने नारी सौंदर्य की कलात्मक अभिव्यक्ति की है। रोमन सभ्यता के समूचे सौंदर्य बोध ने स्त्री के अंग सौष्ठव की ही कलात्मक अभिव्यक्ति की है। हर युग में नारी की स्थिति परिवर्तित हुई है । कभी समाज ने उसकी प्रशंसा की है, तो कभी उसे दासी समझकर उसकी अवहेलना की है। मनु स्मृति में लिखा है - "यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवत:। यत्रे वास्तु न पूज्यंते सर्वास्तत्राफल: क्रिया।" अर्थात जहां स्त्री की पूजा की जाती है वहां देवता वास करते हैं। प्रभावशाली पुरुषवादी समूह ने नारी को अब तक समाज, साहित्य एवं कला से बहिष्कृत रखा था। उसके द्वारा निर्मित कला में भी जो रूप निखरा वह परंपरागत था। सन 1947 तक भारत में स्त्रियों की शिक्षा में काफी सुधार किए गए तथा उन्हें समानता का अधिकार प्रदान करते हुए पुरुषों के समान शिक्षा प्रदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ, स्त्रियों को ललित कलाओं की शिक्षा भी दी जाने लगी। इस समय कला शिक्षा के लिए कोई शिक्षा संस्थान नहीं थी इसलिए समान शिक्षा संस्थानों में कला को सामान्य विषय के रूप में पढ़ती थी, परंतु जैसे-जैसे समय में परिवर्तन आया कला के विभिन्न शिक्षण संस्थानों की स्थापना की जाने लगी। अब स्त्रियों को कला शिक्षा के लिए नवीन मार्ग मिलने प्रारंभ हो गए। भारत में महिलाएं शिक्षा प्राप्त कर अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए आगे आने लगीं। आरंभ में केवल कुछ ही महिला कलाकारों को जाना जाता था जिनमें पारा एवं स्वर्ण कुमारी का नाम प्रमुख है। इन दोनों महिला कलाकारों ने न केवल अपने को अपितु संपूर्ण नारी जाति को सम्मान दिलाया। धीरे धीरे कला के माध्यम से महिलाओं ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना आरंभ कर दिया। यह एक ऐसी लहर थी जो एक बार उठी तो रुकने का नाम नहीं लिया। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के श्री सिंगोर कान्स्टाब्टिनो आगस्तो ने सन् 1822 मुंबई में "स्कूल ऑफ आर्ट फॉर लेडीज"के नाम से ब्रिटिश महिलाओं के लिए एक स्कूल आरंभ किया। स्कूल में भारतीय महिलाओं के लिए दरवाजे बंद थे। ब्रिटिश शासन काल में ही कोलकाता में सन् 1879 युवा महिला कलाकारों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें रविंद्र नाथ टैगोर की भतीजी ग्रहणी सुनयना देवी को लोक कला के लिए सेलिब्रिटी स्टेटस दिया गया ।

बीसवीं शताब्दी में भारतीय महिला कलाकारों का अभिनंदन किया गया । जिनका एक विस्तृत समूह के रूप में इस शती में पदार्पण हुआ । इस सदी के कई दशकों में महिला चित्रकारों ने मनुष्य के आंतरिक भागों को सामाजिक स्तर प्रदान किया । आत्म चिंतन वैचारिक मंथन और अति संवेदनशीलता महिला कलाकारों की कृतियों में मुख्य रूप से परिलक्षित होती है, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से समाज में नारी संघर्ष का आव्हान करती है । महिला कलाकारों ने अपने आंतरिक संघर्ष को कृतियों के रूप में प्रस्तुत किया । विषयों, आकारों तथा रगों में जो व्यक्तिगत दृष्टिकोण है वह कहीं न कहीं से नारी के मनोवैज्ञानिक धरातल को दर्शाता है, जिसमें नारी और उसके चारों ओर के परिवेश की जकड़न का अनुभव किया जा सकता है ।

सन् 1970 के दशक में महिला कलाकारों की कला में कुछ परिवर्तन आया । अब उनमें आत्म जागृति का उदय हुआ । सन् 1986 ललित कला अकादमी, त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली, भारत सरकार के मानव अधिकार एवं विकास मंत्रालय, शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्रालय, वूमन वेलफेयर मंत्रालय एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से "भारतीय महिला कलाकार"शीर्षक से देश की प्रमुख महिला कलाकारों की संयुक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । निश्चित ही देश में महिला कलाकारों की यह प्रथम विशाल प्रदर्शनी थी, जिसमें देश की अनेक महिला कलाकारों को मंच प्रदान किया गया । इस प्रदर्शनी में 43 महिला कलाकारों की 73 कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया । उन्हें स्वयं के विचारों तथा भावनाओं को प्रकट करने का एक उचित मंच प्राप्त हुआ ।

महिला कलाकारों का कला जगत मे अपनी पहचान बनाने की एवं एक उचित स्थान प्राप्त करने में देरी का कारण भारत में नारीविषयक कला के आगमन मे विलंब होना रहा ।आधुनिकवाद के समान स्त्रीवादी कला भी भारत में पश्चिम के बाद आयी । अमृता शेरगिल को छोड़कर भारत में आधुनिकवाद की प्रारंभिक अवस्था में महिला कलाकारों की भागीदारी नहीं रही ।राष्ट्रीय पहचान की ये आरंभिक लड़ाईयां पुरुषों ने लड़ी ।उस समय तक महिला कलाकार भारतीयता के विचार से बहुत कम परिचित थी । धीरे-धीरे उन्होंने स्वयं की अभिव्यक्ति के लिए माध्यमों को खोजा और अपने समय के आधुनिकतावादियों की भांति स्वयं की पहचान के लिए अनेक रास्ते अपनाए । भारतीय कला में एक नवीन क्रांति का सूत्रपात किया । महिला कलाकारों ने स्वयं अथवा अन्य मानव शरीर के चित्र द्वारा एक ऐसी भाषा को व्यक्त किया जिसमें आवाज न होते हुए भी समाज की प्रतिध्वनि सुनाई देती है । उनकी कलाकृतियों में एक प्रकार का खुलापन है, जो समाज की वास्तविक स्थिति को उजागर करने में सहज रूप से सक्षम है । आज कला जगत से जुड़ी लगभग समस्त विधाओं में महिला कलाकार अपनी सृजनशीलता का परिचय दे रही है। चित्रकला के क्षेत्र में(अंजलि इला मेनन, नलिनी मलानी, अर्पिता सिंह, गोगी सरोज पाल, अपर्णा कौर, रेखा रोडवित्या, अंजू दोदिया, माधवी पारेख, नीलिमा शेख, सुरुचि चौहान, ध्रुवी आचार्य,)ग्राफिक के क्षेत्र में (अनुपम सूद, नैना दलाल, रीनी धुमाल, प्रतिभा दाफोजी)शिल्प के क्षेत्र में (मृणालिनी मुखर्जी, पिल्लू पोचखन वाला लतिका कट्ट, लीला मुखर्जी, त्रिखा मोहनी) इंस्टॉलेशन के क्षेत्र में (शिबा चाच्ची, शिल्पा गुप्ता, हेमा उपाध्याय, रीना सैनी कलाट, पुष्पमाला एन., रूमाना हुसैन, रत्नाबलिकान्त) आदि कला के विभिन्न क्षेत्रों मैं हमें महिला कलाकारों की भागीदारी स्पष्ट दिखाई देती है। इन्होंने भारतीय कलाओं को नवीन अर्थ दिए हैं । महिला कलाकारों ने अभिव्यक्ति के रूप में मानव शरीर को आधार बनाकर अपनी कलाकृतियों द्वारा आधुनिक सामाजिक

परिवेश को इस प्रकार चित्रित किया कि समाज में नग्नता खुले रूप में सामने आ जाती है । यही कारण है कि महिला कलाकार नारी संबंधित विषयों को अपने अधिक निकट अनुभव करती है । इस प्रकार महिला कलाकारों ने अपने वैचारिक दृष्टिकोण को समाज में प्रस्तुत करने के लिए अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए भारतीय कला में नवीन कला आयाम प्रस्तुत किए । महिला कलाकारों ने आधुनिक पद्धतियों, विधियों तथा तकनीकों को बहुत गंभीरता से अपनाया है। उन्होंने भारतीय कलाओं को नवीन अर्थ दिए, उनकी कला में आंतरिक चिंतन को आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति मुखर हुयी है, यही कारण है कि महिला कलाकारों की कला में नारी के विभिन्न विषादमयी प्रतिमा बहुतायत से उभरी हैं।

इस प्रकार भारत में आधुनिक कला की शैशवावस्था महिला कलाकारों ने एक कलाकार की परिधि में आगे बढ़कर एक मां के समान आधुनिक कला को अंगीकार किया एवं उसके हृदय में सुस्त समस्त प्रवृत्ति के विकास के लिए समुचित वातावरण का निर्माण किया।अंततः आज अभिव्यक्ति किस विद्या के अंतर्गत महिला कलाकार कला की मुख्यधारा में पुरुषों के साथ समान रूप से सम्मिलित है।महिला कलाकार पारंपरिक तथा सामाजिक दोहरे भार को वहन करते हुए दृढ़ आत्मविश्वास के साथ अपने कला सृजन को विस्तृत कर समस्त स्त्री जाति के लिए नया इतिहास रचेगीं । जिसकी रूपरेखा वे समकालीन भारतीय चित्रकला में रच चुकी है।

अंजलि इला मेनन

अंजलि इला मेनन भारत की जानी मानी समकालीन महिला कलाकारों में से एक है । इनके द्वारा बनाए गए चित्र दुनिया भर के महत्वपूर्ण संग्रहालय सुरक्षित है।सन 2006 में कैलिफोर्निया के "एशियन आर्ट म्यूजियम ऑफ़ सन फ्रांसिस्को" ने उनकी एक महत्वपूर्ण रचना 'यात्रा' का अधिग्रहण किया। इनकी पेंटिंग के पसंदीदा माध्यम है तेल, पर इसके अलावा वह शीशा और वाटर कलर जैसे दूसरे माध्यम में चित्रकारी करतीं हैं अंजली एक जानी-मानी भित्ति चित्रकार भी हैं और कई समारोहों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी है। वे भारतीय चित्रकार एम.एफ. हुसैन की कला से बहुत प्रभावित थी। जब वह मात्र 18 साल की थी तब उन्होंने अपनी अलग-अलग शैली के 53 चित्रों की प्रदर्शनी लगाई। उनकी इस रचनात्मक प्रतिभा को देखते हुए सरकार ने उन्हें एक छात्रवृत्ति दी जिसके माध्यम से उन्हें विश्व प्रसिद्ध 'इकोल नेशनल सुपरियर डे ब्लू आर्ट्स' में आगे की शिक्षा प्राप्त करने का शुभ अवसर मिला। भारत वापस आने से पहले उन्होंने यूरोप और पश्चिम एशिया की यात्रा की जहां उन्होंने विभिन्न प्रकार की कलाओं का अध्ययन किया । कला जगत में उनकी उपलब्धियों के लिए भारत सरकार ने सन् 2000 में उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया । इनका नाम 'लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड' में भी दर्ज है। सन् 2013 में दिल्ली सरकार ने उन्हें 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया। सन् 2013 में ही भारतीय कला और संस्कृति के क्षेत्र में बेहतरीन योगदान के लिए उन्हें दयावती मोदी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। जुलाई 2018 में दृश्य कला क्षेत्र में योगदान के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कालिदास सम्मान सम्मानित किया गया। अंजलि इला मेनन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पुस्तक भी लिखी गई, जिसका नाम था "थ्रू द पटीना"

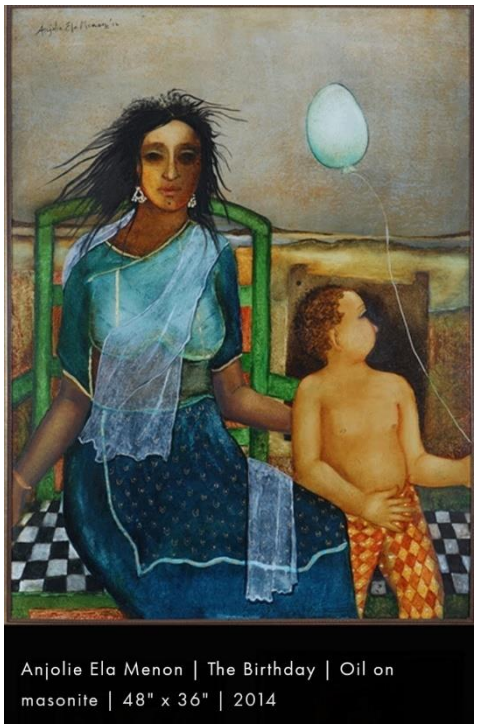

अंजलि इला मेनन

नलिनी मालानी

नलिनी ने अपना कला कार्य एक चित्रकार के रूप में प्रारंभ किया तथा बाद में लगभग 1990 के समय उसमें विभिन्न माध्यमों का प्रयोग कर उसे विस्तृत रूप प्रदान किया गया। उन्होंने अपनी कृतियों के अंतर्गत चित्रण के साथ साथ अभिनय, संस्थापन, वीडियो संस्थापन आदि को भी अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति का हिस्सा बनाया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय एंव राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनाई। मालानी ने कला अध्ययन 'सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट्स' मुंबई से किया, उसके पश्चात वर्ष 1970-72 के मध्य फ्रेंच गवर्नमेंट की छात्रवृत्ति के अंतर्गत फ्रांस (पेरिस) में अध्ययन किया।मालानी को एक उत्तर-आधुनिक कलाकार के रूप में माना जा सकता है, उनके कलाकार्य एवं भूत और वर्तमान की सीमाओं तथा पारंपरिक कलाओं को समाप्त करते हैं। उन्होंने पहली संस्थापन कृति (installation art) सन 1991 में बनाई उसको शीर्षक दिया 'एली वे लोहार चाल' इसमें 9 × 4 फीट के स्याही से निर्मित 7 चित्र थे। इन्हें इस प्रकार लटकाया गया कि दर्शक प्रत्येक चित्र को एक दूसरे पर स्थापित देख सकें । नलिनी मालानी की कला कल्पना एवं आकृतियों की धारा के मध्य बहती है एक तरफ उसमें भविष्य की कल्पना एवं दृष्टि है तो दूसरी तरफ दबी हुई स्मृतियां तथा पौराणिक कथाओं का साम्राज्य है।अपने स्क्रीन कलात्मक विशेषताओं के साथ आज नलिनी मालानी भारतीय चित्रकार एवं संस्थापक कलाकार के

रूप में विश्व स्तर पर अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए हैं।

नलिनी मालानी

अर्पिता सिंह

अर्पिता सिंह ने अपनी कलात्मकता से ऐसे प्रयोग किए और उन तमाम संवेदनीय विषयों को उठाया जो आमतौर पर लंबे अरसे तक महिला कलाकारों के दायरे से बाहर रहे। एक स्त्री होने के दुख दर्द को अर्पिता की सहानुभूति ने स्त्रियों की दयनीय दशा को अपनी कलाकृति में स्थान दिया।पश्चिम बंगाल में पली-बड़ी अर्पिता वहां के वातावरण से अलग नहीं हो सकी। अर्पिता सिंह ने महिला कलाकारों के लिए सजावटी और शौकिया कला के दायरे तोड़कर उनके लिए नया मार्ग प्रशस्त किया।उसने ऐसे जादुई संसार को रचा जिसमे भारतीय समाज में फैले विरोधाभास की झलक दिखाई देती है।उन्होंने पश्चिम बंगाल की लोक कला से प्रभावित होकर महिलाओं से संबंधित विषय पर कार्य किया।अर्पिता के चित्रों में एक विशेष प्रकार की अनगढता है, जो उनके चित्रों के भीतर ओर भीतर जाने के लिए उकसाती है।उनकी कलाकृति उनकी आत्मा व अनंत शक्ति के आनंद का भंडार है। वह अपनी कलाकृति को एक दरी की तरह बुनती है। सन् 2011 मे इन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

अर्पिता सिंह

गोगी सरोज पाल

प्रख्यात भारतीय महिला कलाकार के रूप में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाली गोगी सरोज पाल का जन्म 1945 में हुआ । उन्होंने जिस सफलता को पाया उसका रास्ता आसान नहीं था।उन्होंने बोल्ड विचार और जीवन शैली को अपनाया और यही बोल्ड विचार हमें उनकी कलाकृतियों में देखने को मिलते हैं,इस प्रकार वे दूसरी महिला चित्रकारों से अलग नजर आती हैं। 1995 में सरोज पाल ने एक एक छोटे आकार की ग्वाश आकृतियों की श्रंखला प्रस्तुत की, जिसका शीर्षक था 'हठयोगिनी शक्ति' संभवत 'शक्ति' विषय पर आधारित उनकी यह प्रथम श्रंखला थी। जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है,उस वर्ष में उनके प्रत्येक क्षेत्र में एक ऊर्जा थी, एक साहसिक एवं उत्साहपूर्ण अभिव्यक्ति थी।गोगी उन महिला कलाकारों में से हैं जो कलाकृति में नारी के किसी भी रूप के लिए स्वयं को ही चित्रित करती हैं । उनकी अधिकांश कलाकृतियों में उनकी स्वयं की मुखाकृति प्रतिबंधित होती है।

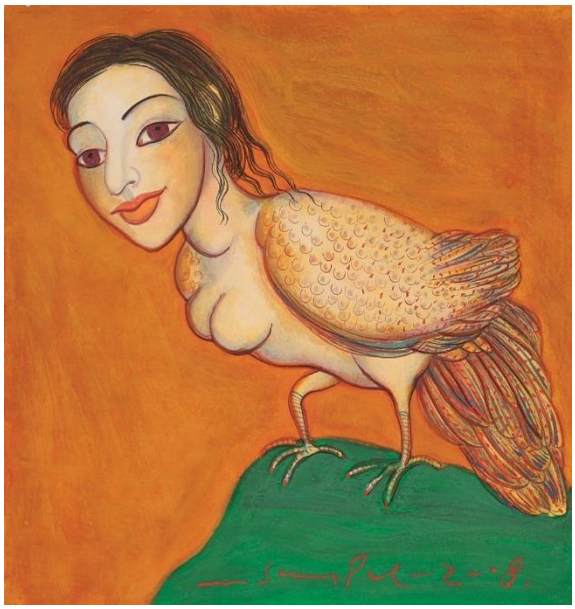

गोगी सरोज पाल

अपर्णा कौर

अपनी आध्यात्मिकता को कला के द्वारा प्रस्तुत करने वाली अपर्णा कौर समकालीन भारतीय कला में एक विशिष्ट स्थान रखती है जिन्होंने दिव्यता तथा आध्यात्मिकता के एक भिन्न पक्ष को समाज के सम्मुख रखा है।उनकी कलाकृतियां अधिकतर महिलाओं पर आधारित होती है। सपाट धरातल पर अपनी सोच व रंगों की समझ को दर्शाते हुए चित्रों की स्थापना की। गहरे धरातल पर हल्के रंग से मानव आकृतियों को उभारा है। उनकी मानव आकृतियां धड़ पेड़ तथा हाथ से अलग होकर भी एक संपूर्ण मानवाकृतियों को दर्शाती हैं उन्होंने कैची व धागों का प्रयोग कलाकृतियों में अधिकता से किया है। इस प्रकार अपर्णा आज अतियथार्थवादी कलाकारों की सूची में मुख्य स्थान पर है।

इस प्रकार आधुनिक भारत की चित्रकला में महिला चित्रकारों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही । बीसवीं सदी से कई दशकों तक महिला चित्रकारों ने मनुष्य के आंतरिक भावों को सामाजिक स्तर प्रदान किया । आत्म चिंतन वैचारिक मंथन

और अति संवेदनशीलता महिला कलाकारों की कृतियों में मुख्य रूप से परिलक्षित होते हैं, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में समाज में नारी संघर्ष का आव्हान करती है। महिला कलाकारों ने अपने आंतरिक संघर्ष को कृतियों के रूप में प्रस्तुत किया। विषयों आकारों तथा रंगों में जो व्यक्तिगत दृष्टिकोण है, वह कहीं ना कहीं से नारी के मनोवैज्ञानिक धरातल को दर्शाता है जिसमें नारी और उसके चारों और के परिवेश की जकड़न को अनुभव किया जा सकता है।

अपर्णा कौर

सन्दर्भ सूची

1. कला दिर्घा = अक्टूबर 2003 अंक 7
2. विनोद भारद्वाज = आधुनिक कला कोश प्रथम संस्करण
3. समकालीन कला = ललित कला अकादमी की पत्रिका नवंबर 1983
4. विरंजन राम = समकालीन भारतीय कला
5. सुरेश शाह। = समकालीन कला अंक 18
6. ज्योतिष जोशी। = आधुनिक भारतीय कला
7. राजेश कुमार शुक्ला= समकालीन कला अंक 27
8. गोगी सरोज पाल= समकालीन कला अंक 18
9. अनीता वर्मा = मनुस्मृति नागरी प्रचार सभा दिल्ली